*Artistic Narration Vol. XV No. 2 July-Dec. 2024 ISSN (P): 0976-7444 (e): 2395-7247*
*Impact Factor 8.898 (SJIF)*

# कला एवं संस्कृति में जलरंग पद्धति का बदलता स्वरूप

**डॉ0 नाजिमा इरफान**
असि0 प्रोफेसर, (चित्रकला विभाग)
रघुनाथ गर्ल्स पोस्ट ग्रेजुएट कॉलिज,
मेरठ
**ईमेलः** *drnazimairfan@gmail.com*

**डॉ0 पूनम लता सिंह**
असि0 प्रोफेसर, (चित्रकला विभाग)
रघुनाथ गर्ल्स पोस्ट ग्रेजुएट कॉलिज,
मेरठ
**ईमेलः** *poonamlatasingh@gmail.com*

Reference to this paper should be made as follows:

**डॉ. नाजिमा इरफान**
**डॉ. पूनम लता सिंह**

कला एवं संस्कृति मे ंजलरंग पद्धति का बदलता स्वरूप

**Artistic Narration**
July-Dec. 2024,
Vol. XV, No. 2
Article No. 28
pp. 169-172

**Online available at:**
https://anubooks.com/journal-volume/artistic-narration-dec-2024-vol-xv-no2

***सारांश***

*कला मानव की सहज अभिव्यक्ति है। भारतीय कला में मस्तिष्क और हस्त कौशल का सर्वोत्तम प्रमाण पाया जाता है। यदि अन्य शब्दों में कहें तो भारतीय कला उसी प्रकार समृद्ध है जैसी भारतीय साहित्य, धर्म और दर्शन। भारतीय कला के ज्ञान से समृद्ध होकर हम यहाँ के शिल्प, मूर्तियों, चित्रों आदि का साक्षात दर्शन कर सकते हैं और उनमें छिपी मानसिक कल्पना, प्रतिभा और प्रयोगधर्मिता के नये आयामों से परिचित हो सकते हैं।*

*मानव मन के अन्तःकरण की अनुभूतियाँ उसे सदा से ही नवीन की ओर अन्वेषण हेतु प्रेरित करती रहती हैं, तथा यह सत्य है कि कला का सम्बन्ध मनुष्य के अपने हृदय की भावनाओं से है इसीलिये कला समय परिवर्तन के साथ–साथ नित नये स्वरूप धारण करती रही है। प्रागैतिहासिक काल से ही हमें कला का निरन्तर विकास दृष्टिगत होता है। भारतीय संस्कृति की विशिष्टता उसकी कला में निहित है, जो इसके स्वरूप का प्रतिपादन करती है।*

**शब्द संकेत – कला एवं संस्कृति, प्रयोगधर्मिता, तकनीकी ज्ञान, भारतीय कला, जलरंग पद्धति।**

कला जगत में ललित कलायें अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं। प्राचीन काल से ही आज तक कलाओं में नवीन प्रयोग होते आ रहे हैं। बंगाल की कला के तीन दशक मुख्य रूप से क्रमिक संरक्षण के युग रहे हैं। इस युग में जो बात मुख्य रूप से दिखाई देती है वह है प्राथमिकताओं का निर्धारण व समय के साथ अपनी सोच पर काबू रखना व अपने मूल्यों का निरूपण करना। कला की इस नवीन शैली को बंगाल स्कूल का नाम दिया गया क्योंकि सौन्दर्यशास्त्र की उन्नति या विकास सर्वप्रथम बंगाल से ही प्रारम्भ हुआ। समयानुसार बंगाल के कुछ प्रतिभाशाली कलाकारों का एक समूह अवनीन्द्रनाथ ठाकुर के सानिध्य में कला की गम्भीर साधना में लग गया। प्रथम कार्य यूरोपियन अध्ययन का बहिष्कार किया। उनके विष्यों में देवी प्रसाद राय चौधरी, क्षितिन्द्रनाथ मजूमदार, कनु देसाई, असित कुमार हालदार, नन्दलाल बोस, मुकुल चन्द डे,के0 वेंकटप्पा आदि बहुत से कलाकार उनके सानिध्य में कार्यरत थे। बंगाल स्कूल के कलाकारों ने जलरंगों को एक नयी प्रतिष्ठा दी और इस दौर के कलाकारों ने इस माध्यम को एक गहरे लगाव के साथ अपनाया था।[1]

यद्यपि जलरंगों का प्रयोग प्राचीन समय से होता आ रहा है किन्तु उन्हें प्रयोग करने में समयानुसार निरन्तर परिवर्तन हो रहा है। इसी कारण उसके प्रयोग में तथाकथित अन्तर है। बंगाल स्कूल के कलाकारों का प्रेरणा स्रोत मुगल, राजस्थानी व यूरोपिय प्रभावयुक्त मिश्रित शैली रही थी। अवनीन्द्रनाथ टैगोर ने अपने विष्यों को भारतीय शैली से प्रेरणा लेकर एक नये कलेवर एक नये आयाम में रचना करने को प्रेरित किया।

विष्णुधर्मोत्तर पुराण में यह कहा गया है कि एक प्रतिभाशाली कलाकार उस वस्तु को चित्रित करता है, जो सम्भावित है। दूसरे शब्दों में जो विश्वास के योग्य है। अतः हम कह सकते हैं कि बंगाल स्कूल के कलाकारों ने जलरंग पद्धति पर विश्वास किया क्योंकि उस समय कलाकार में संयम था तथा वह पूर्णतः अपनी कलाकृति को समर्पित होकर ही अपने कार्य को पूर्ण करता था, इसी के साथ कलाकार किसी एक धारा से जुड़कर कार्य करने में विश्वास करता था, जैसे एक संयुक्त परिवार की परम्परायें एकजुट होकर संयम के साथ निर्वाह करती है। शुद्ध जलरंग तकनीक में रंगों की पारदर्शिता का उपयोग ही इसी प्रमुख विशेषता है।[2]

अवनीन्द्रनाथ टैगोर ने दो जापानी कलाकारों हिसीदा व टायकन से जलरंग की वाश पद्धति को सीखा और उसे अपने चित्रों में एक नये कलेवर के साथ प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने शिष्यों के साथ मिलकर भारतीय शैली से प्रेरणा लेकर नयी शैली को आत्मसात कर रचना करने के लिये प्रेरित किया। इस श्रृंखला में लाहौर के कलाकार अब्दुर्रहमान चुगताई का कार्य भी जलरंगों की वाश पद्धति पर आधारित है। उन्होंने जलरंग पद्धति को अपने अन्दर समाहित करके एक चित्र श्रृंखला का निर्माण किया जो भारतीय चित्रकला के इतिहास का एक अमूल्य हिस्सा बन गई। इन चित्रों में हमें अजन्ता के चित्रों की आत्मा के दर्शन होते हैं। जो कोमल, लयात्मक एवं गतिपूर्ण रेखायें हमें अजन्ता के चित्रों में मिलती है उन्हीं का समावेश जलरंग की वाश तकनीक से बने चित्रों में देखने को मिलता है।

समय के साथ कलाकार बदल जाते हैं तथा प्रयोगधर्मिता के आयाम भी। कालान्तर में हम कुछ अन्य कलाकारों को जलरंगों के नये आयाम के साथ पाते हैं जिनके अन्तर्गत अर्पिता सिंह, नीलिमा शेख, माधवी पारेख और नलिनी आदि के नाम गिनाये जा सकते हैं। इन कलाकारों ने जलरंग माध्यम द्वारा चित्रों में ऐसी अभिव्यक्ति दी जो अपने अन्दर नवीनता का बीज बो रहे थे।

समय के साथ बदलाव आया एवं एक समय ऐसा आया कि जब कलाकारों ने जलरंगों की वाश पद्धति को उपयोग में लाना बहुत कम कर दिया था तथा समय के साथ स्थिति में पुनः परिवर्तन आया और

जे0 स्वामीनाथन, भूपेन, खक्कर जैसे कलाकारों के द्वारा पुनः जलरंगों से बने चित्रों का दौर प्रारम्भ हुआ। अंबादास, अमिताभ दास, जय झरोटिया आदि कलाकारों ने जलरंगों को आत्मीयतापूर्ण प्रयोग किया है। बंगाल के ही कलाकार श्यामल दत्त राव और धर्मनारायण दास गुप्त की रचनायें अपनी जलरंगों की पारदर्शी परतों और अनुभूतियों से मन में एक गहरी छाप छोड़ती है। आधुनिक कलाकारों में बिहार के जलरंगकर्मी शयामल दत्त रे का कार्य भी सराहनीय है।[3] अपने चित्रों में वाश पद्धति को न अपनाते हुए विपरीत प्रणाली अपनाते हुऐ नये ढंग से जलरंगों को चित्रों में उभारा है। उनके चित्रों ने बंगाल स्कूल ऑफ आर्ट के इतिहास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्हें जलरंगों के माध्यम में तीव्रता लाने के लिये जाना जाता है जबकि बंगाल स्कूल ऑफ आर्ट ने हल्के और पानी वाले रंगों का उपयोग कियां उनके आसपास की दुनिया के विरोधाभास उनके चिंतनशील और उदास चित्रों में दिखाई देते हैं। रे की कला में अधिकतर कलकत्ता के शहरी जीवन को दर्शाया गया है, जिनमें उनकी सारी खुशियाँ और दुख, संघर्ष और कठिनाई, गरीबी और आशीर्वाद भी सम्मिलित है। श्यामल दत्त रे और ध र्मनारायण दास गुप्त ने जलरंगों में जो रचनायें की हैं व अपनी रंग आभाओं में पारदर्शी और अपारदर्शी रंग परतों में और अपनी सूक्ष्म अनुभूतियों में मन पर एक अच्छी छाप छोड़ती हैं।[4]

हर मन स्थिति को जनमानस तक पहुँचा देने का काम जलरंगों में सम्भव हो सका है। जिसने कलाकृति में मुग्धकारी सौन्दर्य तत्व को एक डोर में पिरो रखा है। आधुनिक कलाकार मिश्रित माध्यम को अपनाते हुए जलरंगों को अपने चित्रों में नये–नये प्रयोग कर समय की मांग को पूरा कर रहा है। वास्तव में जलरंगों में चित्रित चित्रों की संख्या अनन्त है क्योंकि आधुनिक कलाकार ने जलरंगों की प्रयोगधर्मिता को स्वयं अपने अनुसार ढाल लिया है जैसे चित्रों में तेलरंगों की उपस्थिति के साथ जलरंगों की उपस्थिति कलाकार की कार्यकुशलता को दर्शाता है।

आधुनिक कलाकार मन एवं मस्तिष्क से कला को समर्पित है, क्योंकि वो जान चुका है किसी भी देश की संस्कृति या भाषा उसके लिये रूकावट नहीं है, क्योंकि कलाकार अपने आपको कला के एक नवीन परिप्रेक्ष्य में देखता है। कलाकारों में मन व मस्तिष्क से जड़ताओं को समाप्त होता देखा जा सकता है। कलाकार चिन्तन संस्कृति व संस्कारों को फिर से देखकर तथा नये–नये प्रयोगों द्वारा कला जगत को नये आयाम देने का प्रयास कर रहा है और कला को भावों के साथ आत्मसात् करके विभिन्न प्रयोग कर रहा है जो प्रचलित और परम्परागत कला विधियों से भिन्न होते हुए भी कलाकार के अहम् को शान्त कर रहा है। प्रकृति का एक नियम परिवर्तन है, इसी परिवर्तन के उतार चढ़ाव में कलाकार परम्पराओं को न छोड़कर नये प्रयोगों में नये आयामों द्वारा नया दायरा बना रहा है। परम्परा और प्रयोगधर्मिता के इस सम्मिश्रण को कलाकार एक स्थायित्व प्रदान करता है जो आनन्द का माध्यम बनता है। कला सम्बन्धी विचारों में यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है कि कला में अभिव्यक्ति होती है।[5]

नवीनताएँ, प्रयोगधर्मिता आज के परिवर्तशील आधुनिक कला की माँग है, जिस प्रकार सज्जन या शोध की कोई सीमा नहीं होती है उसी प्रकार प्रयोगधर्मिता में अभिव्यक्ति की कोई सीमा नहीं होती है। आध ुनिक कलाकार जलरंग की धैर्यवान वाश पद्धति को एक ओर रखकर उसी को अपने समय एवं अपनी कलाकृति की माँग के आधार पर अपने निजी तरीके से प्रयोग कर रहा है। यह बात सत्य नहीं है कि कलाकार को उसकी जानकारी नहीं है, अपितु वह तो उसे अपने चित्र में नये प्रयोगों के साथ देख रहा है। जिस समय जलरंग पद्धति में वाश तकनीक का पर्दापण हुआ था, उस समय चित्रों को बनाने में महीनों का समय लग

जाता था, किन्तु आज समय के अभाव में कलाकार उस तकनीक को न भुलाते हुए कलाकृति के भाव में अधिक समा रहा है। इसी कारण कलाकारों का एक बड़ा समूह अमूर्तता व जटिलता की ओर अग्रसर होता जा रहा है। यद्यपि अमूर्तता को प्रमुख आधुनिक कला रूपों में से एक माना जाता है, जिसमें प्रकाश और रेखा के सामान्य प्रभाव का उपयोग करके चित्र को पूर्ण किया जाता है। इसमें कलाकार के लिये एक स्वतंत्र राह खुली। अमूर्त एक व्यापक शब्द है, जो कला में अमूर्तवाद के अनेकों संस्करणों को समाहित कर सकता है जबकि कला मुख्य रूप से रंग और रूप पर केन्द्रित है।

आज के कलाकार में सबसे बड़ी कमी यह है कि वह कलाकृति को जल्द पूर्ण कर अन्य कार्य करने की योजना बनाता है। इसका एक अन्य कारण हमारे समाज की अर्थव्यवस्था भी है। आज के दौर में आम नागरिक को दो जून की रोटी जुटाना भी कठिन है, क्योंकि जब पेट भरा होता है तभी कला का आनन्द भी लिया जा सकता है। समकालीन कला वास्तविक रूप में काफी हद तक व्यवसायिक कला हो गयी है। इस समय कलाकारों की एक ऐसी जमात तैयार हो रही है जो खरीदने वाले दर्शकों को ध्यान में रखकर चित्रों का सृजन कर रहे हैं। आधुनिक कलाकार स्वयं को सुख देने के लिये नहीं, अपितु दूसरों के लिये कलाकृति का निर्माण कर रहा है। कलाकार के लिये इस आधुनिक प्रयोगधर्मिता के युग में कदम–कदम पर चुनौतियाँ हैं, कहीं प्रशंसक के रूप में, कहीं आलोचकों और कहीं संग्रहालयों के रूप में। सही अर्थों में कलाकार का एक मात्र ध्येय आज इन सबकी प्रशंसा चाहता है तथापि इस दौर में भी जलरंग अपनी गुणवत्ता के आधार पर अपनी खास जगह बनाये हुए हैं। आज के इस भूमण्डलीकरण की संस्कृति में हर तकनीक कें नई–नई क्षमताऐं विकसित हो रही हैं। नित नये प्रयोगों द्वारा कलाकार नई सम्भावनाओं को जन्म दे रहा है। जलरंग माध्यम भी इस समय के आन्दोलन से अछूता नहीं रहा है और नये प्रयोगों के लिये नये द्वारा खोल दिये हैं।

**सन्दर्भ**

1. शुक्ल प्रयाग–समकालीन कला, ललित कला अकादमी की पत्रिका, नवम्बर 1986/मई/1987, संख्या 7, (पृ0 सं0 17)

2. डॉ0 शुकदेव श्रोत्रिय, कला बोध एवं सौन्दर्य, चित्रायन प्रकाशन, मुजफ्फरनगर, 1997 ई0, (पृ0 सं0 138)

3. Ghosh Mrinal, Sojourns of a Painter, Mapin Publishing Pvt. Ltd., Chitrakoot Art Gallery, Calcutta (p. 19)

4. समकालीन कला अंक 7/8 वर्ष 1986–.1987, (पृ0 सं0 17)

5. डॉ0 शुकदेव श्रोत्रिय, कला बोध एवं सौन्दर्य, चित्रायन प्रकाशन, मुजफ्फरनगर, 1997 ई0, (पृ0 सं0 11)